अमृत वाणी

आभूषणों से आत्मा ऊंची नहीं हो सकती।

- प्रेमचंद

संपादकीय

प्रकृति का भयावह तांडव

प्रकृति का कहर जब कहीं पर बरपता है तब सारी मानवीयता उसके समक्ष असहाय बनकर रह जाती है। पलक झपकते सब कुछ ऐसे खत्म हो जाता है मानो वहां कुछ रहा ही न हो। प्रकृति एक ओर जहां सारी दुनिया के अस्तित्व को संवारे हुए है वहीं उसकी विनाशलीला क्षण भर में उसे मिटा भी देती है। म्यांमार में विगत 28 मार्च को प्रकृति ने उस समय कुछ ऐसा ही भयावह तांडव मचाया जब अचानक आये 7.7 तीव्रता के भूकंप ने लगभग 2 मिनट तक वहां की धरती को ऐसे झकझोरा कि वहां की 18 लाख की आबादी का पूरा जीवन ही तहस नहस हो गया। सैकड़ों लोगों की जान चली गई और उतने ही लोग अस्पतालों में पड़े मौत से संघर्ष कर रहे है। चारों ओर ऐसा तबाही का मंजर कि देखने से दिल दहल जाता है। कितने ही निर्माणाधीन इमारतें ढह गई, कितनी खूबसूरत आशियाने उजड़ गए, नदी के पुल ध्वस्त हो गए, सड़कें उखड़ गई, बिजली फोन सारे कनेक्शन टूटकर बिखर गए। कितने ही लोग मलबे में दब गए। बची आबादी सूनी आंखों से चारों ओर अपनों को तलाशती दिखी। कल्पना करना भी असंभव सा लगता है कि इतना खूबसूरत देश एक पल में इस तरह खंडहर में तब्दील भी हो सकता है। इस भयावह भूकंप ने इस देश के पांच शहरों को पूरी तरह से तहस नहस कर दिया है। जहां घर -बार, सड़क पुल पुलिया, संचार व्यवस्था, विद्युत, जल आपूर्ति व्यवस्था सब कुछ कहीं जमीन्दोज हो गया है तो कहीं पूरी तरह से टूटकर छिन्न भिन्न हो गया है।

सत्तारुढ़ सैन्य सरकार ने राहत कार्य युध्द स्तर पर शुरु अवश्य किए है लेकिन प्रभावित लोगों को इस भयावह स्थिति से उबारना और लगभग खंडहर में तब्दील प्रभावित शहरों को फिर से सामान्य स्थिति में लाना कोई आसान काम नही है। ढही इमारतों और घरों के मलबे के नीचे न जाने कितने लोग अब तक दबे हुए है। यातायात व्यवस्था से लेकर पानी, बिजली, संचार व्यवस्था को फिर से बहाल किया जाना भी कम बड़ी चुनौति नही है और इन सबसे बढ़कर समय की सबसे अहम और सर्वोच्च प्राथमिकता इस समय घायलों को श्रेष्ठ चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने की है। जो चले गए उन्हें लौटाया तो नही जा सकता, कम से कम जिन्हें बचाया जा सकता है उनके लिए यथासंभव तो करना ही होगा। यह वह समय है जब सारी दुनिया को सहृदयता का परिचय देते हुए जल्द से जल्द म्यांमार के सहयोग के लिए आगे आना होगा।

अच्छी बात यह है कि भारत हमेशा से ऐसे नाजुक क्षणों में हर किसी के लिए अपने सहयोग के हाथ बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है। इस बार भी बिना कोई विलंब किए भारत सरकार ने अपना 100 सदस्यीय चिकित्सकीय दल म्यांमार के लिए रवाना कर दिया है। आशा की जानी चाहिए कि सबके सहयोग से म्यांमार फिर से अपने सामान्य स्वरुप में लौट आएगा।

राज-काज

घने कोहरे और पाले से कोकून में नमी

तमिलनाडु का धरमपुर रेशम के लिए मशहूर है। यहां सालाना लगभग 17 लाख टन रेशम कोकून की पैदावार होती है। पिछले कुछ हफ्तों में जिले भर में कोहरे और खराब जलवायु परिस्थितियों ने ऐसा डेरा डाला कि कोकून की कीमत में भारी वृद्धि हो गई। फरवरी के दूसरे हफ्ते में इसके दाम 857 प्रति किग्रा. दर्ज किए गए जबकि इस समय औसत कीमत 520 रु पये से अधिक नहीं होती। आम तौर पर इस समय इलाके का मौसम खुला रहता है लेकिन इस बार गहने कोहरे और पाले से कोकून में नमी आ गई। इसके चलते अच्छी गुणवत्ता वाले रेशम का संकट दिखने लगा और दाम चढ़ गए। बदलते मौसम का असर शहतूत के पेड़ों पर भी देखा गया। विदित हो रेशम के कीड़ों का आहार शहतूत ही होता है। मंडी में आवक काम और दाम ज्यादा होने से बुनकर भी परेशान हैं। धर्मपुरी का रेशम तो एक उदाहरण भर है कि किस तरह समय से पहले गर्मी आने का व्यापक कुप्रभाव समाज पर पड़ रहा है। प्रवासी पक्षियों का पहले लौटना, सड़क के कुत्ते और अन्य जानवरों के व्यवहार में अचानक उग्रता और रबी की फसल की पौष्टिकता में कमी,

वृद्धों के लिये उजाला बना सुप्रीम कोर्ट का फैसला

अपने इस महत्वपूर्ण फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि अगर बच्चे माता-पिता की देखभाल नहीं करते हैं, तो माता-पिता की ओर से बच्चों के नाम पर की गई संपत्ति की गिफ्ट डीड को रद्द किया जा सकता है। यह फैसला माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों के भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम के तहत दिया गया है, जिससे वृद्धों की उपेक्षा एवं दुर्व्यवहार के इस गलत प्रवाह को रोकने में सहयोग मिलेगा। क्योंकि सोच के इस गलत प्रवाह ने न केवल वृद्धों का जीवन दुश्वार कर दिया है बल्कि आदमी-आदमी के बीच के भावात्मक फासलों को भी बढ़ा दिया है।

> देश ही नहीं, दुनिया में वृद्धों के साथ उपेक्षा, दुर्व्यवहार, प्रताड़ना, हिंसा तो बढ़ती ही जा रही है, लेकिन अब बुजुर्ग माता-पिता से प्रॉपर्टी अपने नाम कराने या पित्र उनसे गिफ्ट हासिल करने के बाद उन्हें यूं ही छोड़ देने, वृद्धाश्रम के हवाले कर देने, उनके जीवनयापन में सहयोगी न बनने की बढ़ती सोच आधुनिक समाज का एक विकृत चेहरा है। संयुक्त परिवारों के विघटन और एकल परिवारों के बढ़ते चलन ने वृद्धों के जीवन को नरक बनाया है। बच्चे अपने माता-पिता के साथ बिल्कुल नहीं रहना चाहते। ऐसे बच्चों के लिए सावधान होने का वक्त आ गया है, सुप्रीम कोर्ट ने इसको लेकर एक ऐतिहासिक फैसला दिया है।

वसुधैव कुटुम्बकम् की बात करने वाला देश एवं उसकी नवपीढ़ी आज एक व्यक्ति, एक परिवार यानी एकल परिवार की तरफबढ़ रहे हैं, वे अपने निकटतम परिजनों एवं माता-पिता को भी बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं, उनके साथ नहीं रह पा रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के फैसले को पलटते हुए सराहनीय पहल की है जिसमें कहा गया था कि अगर गिफ्ट डीड में स्पष्ट रूप से शर्तें नहीं हैं, तो माता-पिता की सेवा न करने के आधार पर गिफ्ट डीड को रद्द नहीं किया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हाईकोर्ट ने कानून का 'सख्त दृष्टिकोण' अपनाया, जबकि कानून के वास्तविक उद्देश्य को पूरा करने के लिए उदार दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता थी। यह फैसला एक महिला की उस याचिका पर आया जिसमें उसने अपने बेटे के पक्ष में की गई गिफ्ट डीड को रद्द करने की मांग की थी क्योंकि बेटे ने उसकी देखभाल करने से इनकार कर दिया था। परिवारों में संपत्ति के विवाद तो पता नहीं कब से चले आ रहे हैं, लेकिन आधुनिक समाज में ये विशेष रूप से बढ़ गए हैं। सुप्रीम कोर्ट के फैसले से समाज में बुजुर्ग लोगों की उपेक्षा, दुर्व्यवहार एवं उनके प्रति बरती जा रही उदासीनता की त्रासदी से उन्हें मुक्ति देकर उन्हें सुरक्षा कवच मानने की सोच को विकसित करने की भूमिका बनेगी ताकि वृद्धों के स्वास्थ्य, निष्कंटक एवं कुंठारहित जीवन को प्रबंधित किया जा सकता है। वृद्धों को बंधन नहीं, आत्म-गौरव के रूप में स्वीकार करने की अपेक्षा है।

संवेदनशून्य समाज में इन दिनों कई ऐसी घटनाएं प्रकाश में आई हैं, जब संपत्ति मोह में वृद्धों की हत्या कर दी गई। ऐसे में स्वार्थ का यह नंगा खेल स्वयं अपनों से होता देखकर वृद्धजनों को किन मानसिक आघातों से गुजरना पड़ता होगा, इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता। वृद्धावस्था मानसिक व्यथा के साथ सिर्फ सहानुभूति की आशा जोहती रह जाती है। वृद्धों को लेकर जो गंभीर समस्याएं आज पैदा हुई हैं, वह अचानक ही नहीं हुई, बल्कि उपभोक्तावादी संस्कृति तथा महानगरीय अधुनातन बोध के तहत बदलते सामाजिक मूल्यों, नई पीढ़ी की सोच में परिवर्तन आने, महंगाई के बढ़ने और व्यक्ति के अपने बच्चों और पत्नी तक सीमित हो जाने की प्रवृत्ति के कारण बड़े-बूढ़ों के लिए अनेक समस्याएं आ खड़ी हुई हैं। वरिष्ठ नागरिकों के हितों की रक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि ऐसे कई वरिष्ठ नागरिक हैं जिन्हें उनके बच्चे अनदेखा कर देते हैं और संपत्ति हस्तांतरित करने के बाद उन्हें अपने हाल पर छोड़ देते हैं। जस्टिस सीटी रविकुमार और संजय करोल की पीठ ने कहा कि यह अधिनियम एक लाभकारी कानून है जिसका उद्देश्य उन बुजुर्गों की मदद करना है जिन्हें संयुक्त परिवार प्रणाली के कमजोर होने के कारण अकेला छोड़ दिया जाता है। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए इसके प्रावधानों की व्याख्या उदारतापूर्वक की जानी चाहिए, न कि संकीर्ण अर्थों में।

पहले परिवार से किसी भी मनुष्य की पहचान जुड़ी होती थी, इसलिए लोग परिवार से जुड़े रहते थे। अब उसकी पहचान उसकी कार या कपड़ों के ब्रांड आदि भौतिकतावादी चीजों से होती है। यह भौतिकवाद की मृगतृष्णा इंसान की सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक पहचान पर हावी हो गई है, बल्कि अब तो संस्कृति और आध्यात्मिकता भी उपभोक्ता वस्तु की तरह बाजार में हैं। एक बड़ी समस्या भारत जैसे देशों में है, जो इस दौड़ में शामिल हो गए हैं, पर इतने समृद्ध नहीं हुए हैं कि इस जीवनशैली को आसानी से अपना सकें। भारत में परिवार के सदस्यों में परस्पर दूरियां लगातार बढ़ रही हैं। भूमि संबंधी विवाद भाई-भाई के बीच होते-होते अब पिता-पुत्र के बीच भी होने लगे हैं और मामला हत्या तक पहुंच जाता है। ताजा मामला भी संपत्ति विवाद का ही है। आज के बेटों को पुश्तैनी संपत्ति का लाभ तो चाहिए, पर पिता-माता के साथ रिश्ते अच्छे रखना उनकी प्राथमिकता नहीं है। ऐसे में, कई माता-पिता भी अपनी संतानों को बेदखल करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। यह वक्त है, जब हमें जानना होगा कि अपने लोगों से संबंध और संवाद ही जीवन को सार्थक बनाता है। हमें अपने रिश्तों का दायरा इतना तो जरूर बढ़ाना चाहिए, जिसमें कम से कम अपना निकटतम परिवार पूरी तरह से शामिल हो जाए।

नये विश्व की उन्नत एवं आदर्श संरचना बिना वृद्धों की सम्मानजनक स्थिति के संभव नहीं है। वर्किंग बहुओं के ताने, बच्चों को टहलाने-घुमाने की जिम्मेदारी की फिक्र में प्रायः जहां पुरुष वृद्धों की सुबह-शाम खप जाती है, वहीं वृद्ध महिला एक नौकरानी से अधिक हैसियत नहीं रखती। यदि परिवार के वृद्ध कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, रुग्णावस्था में बिस्तर पर पड़े कराह रहे हैं, भरण-पोषण को तरस रहे हैं तो यह हमारे लिए वास्तव में लज्जा एवं शर्म का विषय है। इसी सन्दर्भ में सुप्रीम कोर्ट की संवेदनशीलता वर्तमान युग की बड़ी विडम्बना एवं विसंगति पर विराम देने का काम करेंगी। निश्चित ही आज के वृद्ध माता-पिता अपने ही घर की दहलीज पर सहमा-सहमा खड़ा है, वृद्धों की उपेक्षा स्वस्थ एवं सुसंस्कृत परिवार परम्परा पर काला दाग है। हम सुविधावादी एकांगी एवं संकीर्ण सोच की तंग गलियों में भटक रहे हैं तभी वृद्धों की आंखों में भविष्य को लेकर भय है, असुरक्षा और दहशत है, दिल में अन्तहीन दर्द है। इन त्रासद एवं डरावनी स्थितियों से वृद्धों को मुक्ति दिलाने के लिये जहां सुप्रीम कोर्ट का फैसला रोशनी बना है वही इसके लिये आज समाज एवं परिवार स्तर पर विचारक्रांति ही नहीं, बल्कि व्यक्तिक्रांति एवं परिवार-क्रांति की जरूरत है। सरकारों को भी सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए बेरोजगारों को या वृद्धजनों को सरकारी आर्थिक सहायता का प्रावधान करना चाहिए।

रमेश सर्राफधमोरा

(ये लेखक के अपने विचार है)

सीरिया में गृह युद्ध की आशंका बढ़ी

राजनीतिक अस्थिरता, धार्मिक हिंसा, चरमपंथ, आतंकवाद और विदेशी हस्तक्षेप सीरिया की प्रमुख समस्या रही हैं, और लगता है कि असद के पतन के बाद भी मध्य-पूर्व के इस देश में शांति लौटती हुई दिखाई नहीं दे रही है।

असद के समर्थकों को मोहम्मद अल-जुलानी पर भरोसा नहीं है, और उनकी आशंका सच भी साबित हुई है। अल्पसंख्यक अलावी समुदाय के हजारों लोगों को मार दिया गया है। ऐसे तथ्य सामने आए हैं कि हयात तहरीर अल-शाम के सुरक्षा बलों को पूर्व राष्ट्रपति असद के समर्थकों से लडने के लिए भेजा गया है।

सीरियाई सुरक्षा बलों द्वारा सीरियाई तट के गांवों और इलाके के लोगों की हत्या, कब्जा और यातना के कई वीडियो सामने आ रहे हैं, जिन्हें लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गहरी चिंता जताई जा रही है। सीरिया की अंतरिम सरकार ने देश के तटीय इलाकों लताकिया और टार्टस में बड़ी संख्या में सैनिकों को तैनात किया है। लताकिया में अलावाइट्स, सुन्नी मुस्लिम और ईसाई जैसे जातीय और धार्मिक समूह रहते हैं। लाताकिया सीरिया का अलावाइट बहुल क्षेत्र है, और यहां अलावाइट समुदाय का विशेष प्रभाव है। टार्टस सीरिया के पश्चिमी तट पर स्थित है, और यहां अलावाइट समुदाय की अधिकता है। यह इलाका बशर अल-असद का प्रमुख गढ़ माना जाता है। देश के तटीय इलाकों में अलावी और ईसाई अल्पसंख्यक समुदाय पर सुरक्षा बलों के हमलों का असर देश के दूसरे कई इलाकों पर पड़ रहा है, और इससे तनाव गहरा गया है। मोहम्मद अल-जुलानी देश में बाहरी हस्तक्षेप रोकने की बात कह रहे थे लेकिन उनके कदम ठीक इससे उलट दिखाई दे रहे हैं। सीरिया की सरकार ने देश की सुरक्षा सुनिश्चित करने और पेशेवर सेना तैयार करने के लिए देश के सशस्त्र बलों में उइगर, जॉर्डनियन और तुर्क सहित कुछ विदेशी लड़ाकों को प्रमुख जिम्मेदारियां सौंपी हैं। उनका यह कदम अन्य जातीय-धार्मिक समूहों के लिए विचलित करने वाला है। जुलानी का आईएस से गहरा संबंध रहा है, और दुनिया के इस सबसे दुर्दात आतंकी संगठन का किसी देश में सीमा पर कोई विश्वास नहीं है, आईएस को विदेशी लड़ाकों की सुस्थापित सैन्य इकाई माना जाता है। जुलानी ने आईएस से अलग होकर ही हयात तहरीर अल-शाम नामक गुट बनाया था और वे खुद को उदार नेता के रूप में प्रस्तुत कर सीरिया के कई जातीय समूहों का विश्वास जीतने में सफल भी हो सके। लेकिन अब जब देश की कमान उनके हाथ में आई तो उन्हें लेकर आशंकाएं भी कम नहीं हैं। एचटीएस की स्थापना 2011 में एक अलग नाम, जबात अल-नुसरा के तहत अल-कायदा के प्रत्यक्ष सहयोगी के रूप में की गई थी। स्वयंभू इस्लामिक स्टेट का नेता अबू बक्र अल-बगदादी भी इसके गठन में शामिल था। अल-जुलानी ने सार्वजनिक रूप से अल कायदा और इस्लामिक स्टेट से नाता तोड़ लिया है, लेकिन वे सुन्नी मुसलमान हैं, जो खलीफाओं के प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं।

> नागपुर के दृश्य निस्संदेह फिर देश को भयभीत कर रहे हैं। 33 से ज्यादा पुलिसकर्मियों का घायल होना, भारी संख्या में वाहनों की तोड़फोड़ या जलाना, जगह.जगह घरों और दुकानों का क्षतिग्रस्त होना बताता है कि हमले सुनियोजित थे। विधानसभा में मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़णवीस ने बयान भी दिया कि यह सुनियोजित हमला लगता है।

खलीफा अरबी भाषा में ऐसे शासक को कहते हैं, जो किसी इस्लामी राज्य या अन्य शरिया से चलने वाली राजकीय व्यवस्था का शासक हो। यह इस्लाम की पारंपरिक और प्राचीन विचारधारा है, जिस पर बहुसंख्यक सुन्नी भरोसा करते हैं। दुनिया में आईएस के उभार के केंद्र में इस विचारधारा को रखा गया जब एक दशक पहले इस्लामी चरमपंथी संगठन आईएस ने इराक और सीरिया में अपने कब्जे वाले इलाकों में खिलाफत यानी इस्लामी राज्य का ऐलान किया। शिया मुसलमान इतिहास की इस व्याख्या को स्वीकार नहीं करते। असद के जाने के बाद शिया गहरे दबाव में हैं। अलावी, इस्माइलिस और अन्य शिया सीरिया की आबादी का करीब तेरह फीसद हिस्सा हैं। बशर अल-असद सरकार के पतन से पहले उनकी शासन व्यवस्था में सकारात्मक स्थिति मौजूद थी। हयात अल-शाम को सुन्नियों का संगठन माना जाता है, यदि इस विद्रोही संगठन ने शियाओं को निशाना बनाने की कोशिश की तो सीरिया में ईरान और तुर्की के हित भी टकराएंगे। सीरिया में तुर्की ईरान की जगह ले सकता है।

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने

(ये लेखक के अपने विचार है)

देश में जलवायु परिवर्तन-नई नीति की दरकार

भारतीय रिजर्व बैंक के मार्च बुलेटिन में प्रकाशित एक अध्ययन में भी एक गंभीर चिंता जताई गई है, जो देश में वर्षा के वितरण में तेजी से आ रहे बदलाव और खाद्यान्न फसलों पर इसके असर से जुड़ी है। अध्ययन कहता है कि भारतीय कृषि अब भी काफी हद तक मॉनसून पर निर्भर है। आधुनिक सिंचाई सुविधाओं के विस्तार और जलवायु परिवर्तन से बेअसर रहने वाले नई किस्मों के बीज तैयार होने से राहत तो मिली है मगर मॉनसूनी बारिश अब भी निर्णायक होती है। दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के दौरान होने वाली वर्षा खरीफ सत्र में कृषि उत्पादन के लिए बेहद जरूरी है। वर्षा का तरीका बदलने या सूखे जैसी स्थिति से फसल उगाने का चक्र बिगड़ जाता है और कीटों एवं पौधों से जुड़ी बीमारियों की समस्या भी बढ़ जाती है। पर्याप्त और समान वर्षा होने से कृषि उत्पादकता बढ़ जाती है। मॉनसून में अच्छी बारिश रबी सत्र के अनुकूल होती है। मिट्टी में पर्याप्त नमी रहने और जलाशयों में पानी का स्तर अधिक रहने से गेहूं, सरसों और दलहन जैसी फसलों की बोआई के लिए आदर्श स्थिति तैयार होती है। खरीफ सत्र में मोटे अनाज, तिलहन, दलहन और चावल की उपज में सालाना वृद्धि के आंकड़े देखें तो जिस साल दक्षिण पश्चिम मॉनसून सभी फसलों के लिए बेहतर रहा उस साल उत्पादन भी ज्यादा रहा। लेकिन अतिवृष्टि ने मक्के और तिलहन की उपज बिगाड़ी। अध्ययन में कहा गया है कि उत्पादन इस बात पर भी निर्भर करता है कि मॉनसूनी बारिश कब आती है। उदाहरण के लिए जून और जुलाई में कम बारिश मक्का, दलहन और सोयाबीन के लिए खास तौर पर नुकसानदेह होती है क्योंकि मिट्टी में नमी कम होने के कारण बोआई अटक जाती है और पौधों की शुरुआती बढ़वार पर भी असर पड़ता है। इसी तरह कटाई के समय अत्यधिक वर्षा से तिलहन उत्पादन घट जाता है। पिछले साल मॉनसून में शानदार वर्षा और सटीक ठंड रहने से चालू वित्त वर्ष में फसलों का उत्पादन बेहतर रहने की उम्मीद है। अनुमान है कि पिछले साल के मुकाबले खरीफ का उत्पादन 7.9 प्रतिशत और रबी का 6 प्रतिशत बढ़ सकता है।

राकेश दुबे

(ये लेखक के अपने विचार है)

वर्ग पहेली 5686

संकेतः बाएं से दाएं
1. 1953 को यह देश फ्रांस से स्वतंत्र हुआ (4)
4. चोरी करने के लिए दीवार में किया गया छेद (3)
7. जाने की क्रिया यह कहलाती है (6)
8. लदाई करना, उद्भरण करना (3)
10. नाम को अंग्रेजी में यह कहते है (2)
11. प्रतिष्ठा, ख्याति, माप (2)
14. किसी का हक मारा जाना, स्वत्व हानि (उर्दू)(5)
16. पथ, मार्ग, रास्ता, पंथ (2)
18. वह व्यक्ति जो शासक हो, पटरी, पैमाना (अंग्रेजी) (3)
19. जिसने पहले किसी अपराध में सजा पायी हो, प्राप्तदंड (उर्दू)(4)
21. दीवारों आदि पर बनाए हुए फूल आदि, छोटा वृक्ष (2)
22. मुस्लिम धर्म की ईश प्रार्थना जो पांच वक्त की होती है (3)
23. समतल, चौरस, अंगीकृत (4)

(ऊपर से नीचे
1. यह हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री की पत्नी का नाम है (6)
2. विचलित होना, डगमगाना (3)
3. तीन घंटे का समय, एक पहर (2)
4. बनावटी, कृत्रिम, कूटकृत (3)
5. महसूल, टेक्स, हाथ, हस्त (2)
6. रूप या अस्तित्व प्रदान करना, केला (अंग्रेजी)(3)
9. अग्नि बुझाने का यंत्र (4)
11. सुस्वादु भोजन, क्रय-विक्रय की वस्तु (2)
12. उत्तम, बढिया, उम्दा (उर्दू)(3)
13. परजन भावनापूर्ण, अपनत्वहीन (3)
15. एक प्रकार का फल जो आकार में बड़ा होता है (4)
17. सप्ताह में एक बार होने वाला, साप्ताहिक (2)
20. फर्श पर बिछाने की छपी हुई चादर (3)

वर्ग पहेली 5685 का हल

ग्री	स		सा	ब	र	म	ती
वा	म		ध	म	की		त
	का	नू	न		ब	ला	र
फ	लि	त				त	
	क	न	क		डा	ल	ना
पी		या	र	ना		ग	म
प		द	वा	मी		ना	क
ल	ब्य		ना		हां		

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5686

	4					5	6	
	3	9			8		7	
7			2	5				
3	1				6	7		
		5		7		1		
		6	4				8	9
				9	7			2
	2		8			6	5	
	8	1					9	

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5685

3	9	2	8	5	1	6	7	4
6	8	7	4	2	3	1	9	5
4	5	1	9	7	6	2	8	3
5	6	9	2	3	4	8	1	7
2	3	8	7	1	5	4	6	9
1	7	4	6	9	8	5	3	2
9	1	6	3	4	2	7	5	8
8	2	3	5	6	7	9	4	1
7	4	5	1	8	9	3	2	6